Class – T.D.C. Part III

Paper – V (धर्म-दर्शन)
(Philosophy of Religion)

Topic – अशुभ की समस्या
(Problem of Evil)

डॉ० पुनम शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग
आर० एम० कॉलेज

किन्तु वास्तव में सांसारिक कष्ट या अशुभता को सीधे तौर पर नकार देना, जीवन की बहुत बड़ी सच्चाई को झुठलाना है। प्राकृतिक अशुभ (जैसे - बाढ़, आँधी, सूखा आदि) तथा नैतिक अशुभ (जैसे - हत्या, चोरी, कलंक आदि) - दोनों ही जीवन से साक्षात् जुड़े होते हैं। अशुभ के अस्तित्व को अस्वीकार करने से न्याय-अन्याय, सच-झूठ का अन्तर करना कठिन है। नैतिक अशुभ की व्याख्या नहीं की जा सकती। इसलिए यह विचार अयुक्तिपूर्ण है।

(3) अशुभ शुभ के अस्तित्व के लिए आवश्यक है।

यहूदी एवं ईसाई धर्म में अशुभ की व्याख्या शुभ के साथ ही की गयी है। ईसाई धर्मशास्त्रों में ईसा को सूली पर चढ़ाये जाने को बहुत बड़ी बुराई माना गया है। किन्तु इस धर्म में अशुभ की व्याख्या शुभ के ही एक रूप में की गयी है या शुभ के अस्तित्व के लिए अशुभ के अस्तित्व को आवश्यक कहा गया है। जॉन हिक ने कहा है कि यहूदी एवं ईसाई धर्मों में सीधे तौर पर अशुभ को भ्रम या मिथ्या नहीं कहा गया है।

अगस्टाइन का कहना है कि इस विश्व की रचना शुभता से युक्त ईश्वर के द्वारा शुभ प्रयोजन से की गयी है। विश्व के किसी एक अंश को देखकर सम्पूर्ण विश्व के ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती। मानव अपनी आंशिक दृष्टि से जिसे अशुभ, दुःख या पाप समझता है, वह सम्पूर्णता की दृष्टि से भिन्न होता है। इसीप्रकार लाइबनित्स ने कहा है कि मनुष्य अपनी आंशिक दृष्टि के कारण दुःख और पाप को अशुभ समझता है। सम्पूर्णता की दृष्टि से यह संसार "सर्वश्रेष्ठ सम्भव विश्व" (The best possible World) है।

किन्तु इन विवेचनाओं के बावजूद प्राकृतिक एवं नैतिक अशुभ के अर्थाभ को झुठलाया नहीं जा सकता।

बर्ट्रण्ड रसेल (Bertrand Russell) ने कहा है कि कुछ लोग किसप्रकार यह विश्वास कर लेते हैं कि लाखों वर्षों के प्रयत्न के बाद भी कोई सर्वज्ञ एवं सर्वशक्तिमान ईश्वर ने इससे अच्छे विश्व की रचना नहीं की।

④ अशुभ साधन है।

कुछ विचारकों ने अशुभ को शुभ के विकास के लिए साधन (Instrument) माना है। समसामयिक विचारक हेनेए ने माना है कि विश्व का क्रमिक विकास हो रहा है और उस दिशा में अशुभ एक अनिवार्य सहगामी (Concomitant) है। उनके अनुसार अशुभ के बिना उच्चतर नैतिक विकास सम्भव नहीं है।

किन्तु जॉन मिल ने इस साधनवाद की कड़ी आलोचना की है। उनका कहना है कि अशुभ से कभी शुभ का उदय नहीं होता, बल्कि अशुभ से अशुभ का ही जन्म होता है। उदाहरण के लिए, रोगी हो जाने पर मानसिक एवं शारीरिक क्षमता का ह्रास, गरीबी से जुझते हुए गलत दिशा में जाना आदि। वस्तुतः सही एवं गलत दोनों तरह के लोग प्रकृति के कोप के शिकार होते हैं। साधनवाद के विरुद्ध यह भी एक आपत्ति है कि क्या ईश्वर अशुभ को साधन बनाये बिना शुभ का विकास नहीं कर सकता? मैकी ने कहा है कि यदि ईश्वर साधन की सहायता से कार्य करता है, तो वह सर्वशक्तिमान नहीं रह जाता है।

⑤ प्राकृतिक अशुभ सफलता में सहायक है।

कुछ विचारकों ने प्राकृतिक अशुभ के समर्थन में कहा है कि यह जीवन की सफलता में बाधक न होकर सहायक है। इसके अभाव में विश्व की प्रगति नहीं हो पाती। डॉ० राधाकृष्णन का कहना है कि मानव की

प्रगति का श्रेय अशुभ को ही दिया जा सकता है। जैसे- छोटा बच्चा बार-बार गिरकर ही चलना सीख लेता है। बच्चे का गिरना दुःखद है, किन्तु उसकी परिणति सुखद होती है — चलना सीखने के रूप में। इसीप्रकार भोजन का अभाव दुःखप्रद है, किन्तु उसकी प्राप्ति होने पर सुखद अनुभूति होती है।

कवि कीट्स ने विश्व को स्वयं उत्थान एवं निर्माण की पृष्ठभूमि माना है। रचनात्मक कार्य के लिए दुःख, कष्ट का मिलना अनिवार्य है। प्रो० ब्राइटमैन ने भी कहा है कि मानव चरित्र का विकास कठिनाइयों में ही होता है। दुःख की अनुभूति ही मानवीय संवेदना उत्पन्न करती है। प्रो० एर्ल ने कहा है कि अशुभ का रहना प्रेरणा का स्रोत होता है। इसीप्रकार मैकगिगर्ट का कहना है कि अनुशासन एवं शिक्षा के मूल्यों के लिए अशुभ का महत्व है।

किन्तु इन विचारों पर ध्यान दिया जाये, तो उसकी गहराई में अनेक समस्याएँ दिखलायी पड़ती हैं। वस्तुतः एक आदर्श व्यक्ति भी अशुभ के घोर प्रभाव से क्रोधी, उदासीन एवं निराशावादी हो जाता है। अशुभ का प्रभाव कभी-कभी व्यक्ति को अध्यात्म से विमुख कर देता है। इससे वह अधार्मिक एवं निष्क्रिय हो जाता है। ऐसी स्थिति को देखते हुए यह प्रश्न उठता है कि क्या ईश्वर ऐसी कठिनाइयों के स्थान पर कोई सरल मार्ग उत्पन्न नहीं कर सकता? यदि ईश्वर ऐसा नहीं कर सकता, तो उसे सर्वशक्तिमान कहना कठिन है।

इसप्रकार यह देखा जा सकता है कि ईश्वरवादी विचारधारा में अनेक युक्तियों एवं प्रयत्नों के बाद भी इस समस्या का तर्कपूर्ण एवं सन्तोषप्रद समाधान नहीं हो सका है।

———X———X———